अलंकार

अलंकार का अर्थ - गहना / आभूषण

अलंकार का महत्व - काव्य की सुन्दरता बढ़ाने के लिए अलंकार का प्रयोग करते है

प्रकार

- **शब्दालंकार** – शब्दो के माध्यम से काव्य की सुन्दरता
- **अर्थालंकार** – अर्थ के माध्यम से काव्य की सुन्दरता
- **उभयालंकार** – शब्द तथा अर्थ दोनो के माध्यम से काव्य की सुन्दरता

Trick - अन्नु यश की बीवी

- अन्नु
  - अनुप्रास
- यश
  - यमक
  - श्लेष
- बीवी
  - वक्रोक्ति
  - विप्सा

अनुप्रास अलंकार

पहचान:- जहां एक ही वर्ण की आवृति बार बार हो वहां अनुप्रास अलंकार होता है

उदाहरण:- 1. चारु चन्द्र की चंचल किरणे
खेल रही है। जलथल मे

2. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहुसाय
झुकति महीपति मुन्दिर सेवक सुमित बुलाये

यमक अलंकार :-

पहचान - जहां एक ही शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार हो तथा उनके अर्थ भी अलग अलग हो

उदाहरण :- 1. काली घटा का घमण्ड घटा

2. सजना है मुझे सजना के लिए
(सजना → तैयार होना; सजना → प्रियतम)

3. तीन बेर खाती है तीन बेर खाती है
(तीन बेर → Three times; बेर → फल)

4. कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय
अहि खाये बौराय नर, इहि पाये बौराय
(कनक → धतूरा; कनक → सोना)

5. माला फेरत जग भया फिरा न मनका फेर
करका मनका डारी दे मनका मनका फेर
(मनका → माला का दाना; मनका → हृदय का)

6. जे ते तुम तारे तेते नभ न तारे है
(तारे → उद्धार करना; तारे → आसमान के तारे)

7. कहे कवि बेनी बेनी व्याल की चुराय लीनी

8. खग कुल कुल सा बोल रहा
(खग कुल → पक्षियों का समूह; कुल → चहचहाना)

श्लेष अलंकार

पहचान :- जहां एक शब्द एक ही बार आता है किन्तु उसके अर्थ अलग अलग आते हो वहां श्लेष अलंकार होता है

जैसे - 1. चरन धरन चिन्ता करत चितवन चारहु ओर
सुवरन को ढूढत फिरत कवि व्यभिचारी, चोर

यहां कवि के लिए सुवरन का अर्थ - सुन्दर अक्षर
व्यभिचारी के लिए सुवरन का अर्थ - सुन्दर स्त्री
चोर के लिए सुवरन का अर्थ - सोना

2. रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सुन
पानी गए न उबरे मोती मानुष चून

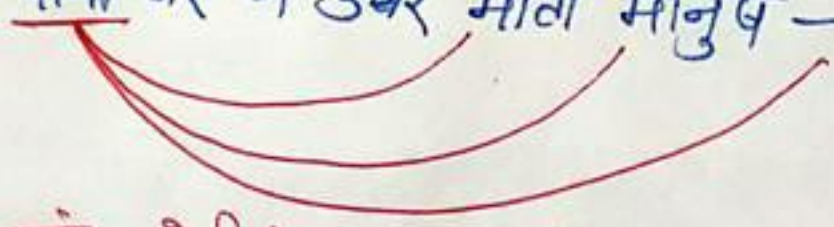

यहां मोती के लिए पानी का अर्थ - चमक
मनुष के लिए पानी का अर्थ - इज्जत
चून के लिए पानी का अर्थ - आटे के लिए जल

3. मगन को देखि पर देत बार बार है

यहां मगन का अर्थ कपड़े या दरवाजा है

उदाहरण:- 4. प्रियतम बतला दे लाल मेरा कहाँ है

यहां लाल का अर्थ बेटा या रत्न है।

5. मधुबन की छाती को देखो सुखि इसकी कितनी गलियाँ

6. जो रहीम गति दीप की कुल कपूत की सोय
बारे उजियारो करे बढ़े अंधेरो हो गए।

7. माया महाठगनी हम जानी
त्रिगुण फांस लिए कर डोले बोले मधुर बानी

तीन धागों से बनी रस्सी — त्रिगुण: सत, रज, तम

वक्रोक्ति अलंकार

पहचान - जहां किसी बात पर वक्ता और श्रोता के बीच में किसी उक्ति के संबंध में भिन्नता का आभास हो

उदाहरण - 1. कौन द्वार पर राधे मैं हरि
क्या वानर का काम यहां

2. को तुम हौ इत आए कहां ?
घनश्याम है तो कितहू बरसो

अर्थालंकार

रूपक अलंकार -

पहचान - जहां उपमेय पर उपमान का अभेद बताया जाता है। वहां रूपक अलंकार होता है
इसमे योजक (-) चिन्ह होते है

उदाहरण - 1. राम का मुख कमल के समान सुन्दर है
उपमेय उपमान

उपमेय - जिसकी तुलना की जाये - राम का मुख
उपमान - जिससे तुलना की जाये - कमल
वाचक - जिस शब्द से तुलना करे - समान
समानधर्म - जिस गुण की तुलना करे - सुन्दर

उदाहरण - 2. चरण-कमल बंदौ हरि राई

3. राम-कृपा भव निसा सिरानी

4. बीती विभावरी जागरी
अम्बर पनघट मे डुबो रही
तारा-घट ऊषा नागरी

6. समय सिंधु-चंचल है भारी

उदाहरण 6- मैया मैं तो चन्द्र-खिलोना लै हो

7- पायो जी मैंने राम-रत्न धन पायो

8. इस है जीवन-तरु के फूल

9. इस सोते संसार बिच
जगकर सजकर रजनी-बोले
कहाँ बेचने ले जाती हो ये गजरे तारो वाले

उपमा अलंकार

पहचान:- जहां एक वस्तु की दूसरी वस्तु से तुलना की जाती है और यह तुलना समान धर्म, स्वभाव शोभा के आधार पर हो
इसमें सा, सी, से सरिस शब्द देखने को मिलते है।

उदाहरण-1. पीपर पात सरिस मन डोला

2. नील गगन सा शांत हृदय था हो रहा

3. सा-सा गम्भीर हृदय हो
गिरी-सा ऊंचा हो जिसका मन

4. हाय फूल सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी

5. हरिपद कोमल कमल से
नदिया जिसकी यशोधरा सी

6. मखमल के झूले पड़े हाथी सा टीला
पड़ी थी बिजली विकराल

7. यह देखिए अरविंद से
शिशु वृंद कैसे सो रहे

उदाहरण 8. ऊषा सुनहले तीर बरसती
जय लक्ष्मी सी उदित हुई

9. मजबूत शिला सी दृढ छाती

10. बरसा रहा कवि अनल
भूतल तव सा जल रहा है

11. दूध सा सफेद चाँद

उत्प्रेक्षा अलंकार

पहचान:- जहां उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है यानि अप्रस्तुत को प्रस्तुत मानकर वर्णन किया जाता है वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है

इसमे ये शब्द देखने को मिलते है- मानो, मनुह जानो, जनुह, जैसे, ज्यो

उदाहरण-1. सखि सोहत गोपाल के उर गुजंन की माल
बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल

यहां पर गुजंन की माला उपमेय मे दावानल की ज्वाल उपमान के सभांवना होने से उत्प्रेक्षा अलंकार है

अतिशयोक्ति अलंकार

पहचान - जब लोकसीमा का उल्लंघन करते हुए किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहा गया हो वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण- 1. आगे नदिया पड़ी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार
राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पर

2. हनुमान की पूंछ मे लगन पाई न आग
लंका सगरी जरी गई गये निशचर भाग

3. वह सर गाडिव से क्षीण हुआ
धड से जयद्रत से उधर सिर क्षीण हुआ

4. बालो को खोल कर मत चला करो
दिन मे रास्ता भूल जायेगा सूरज

5.

सन्देह अलंकार

पहचान - जहां किसी वस्तु को देखकर तत्सदृश्य अन्य वस्तु के संशय होना का चमत्कार पूर्ण वर्णन हो वहां सन्देह अलंकार होता है

उदाहरण - 1. सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है
सारी ही की नारी है नारी ही की सारी है

भ्रांतिमान अलंकार -

पहचान :- जहाँ सादृश्य के आधार पर किसी वस्तु को कुछ और समझ लिया जाये और उसका चमत्कार पूर्ण वर्णन किया जाये वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है

उदाहरण - 1. मुन्ना तब मम्मी के सर पर देख देख दो चोटी
भाग उठा भय मानकर सर पर नागिन लोटी।

विभावना अलंकार

पहचान :- जब किसी कार्य करण की विलक्षण बात कही जाये

उदाहरण- 1. बिनु पद चलै, सुने बिन काना
कर बिनु करम करे विधि नाना

विरोधाभास अलंकार :-

पहचान :- जब दो वस्तुओ मे विरोध न होते हुए भी विरोध प्रतीत हो ।

उदाहरण :- 1. भर लाऊ सीपी मे सागर
पिय अब मेरी हार विजय क्या

2. मूक गिरिवर के मुकरित गान

मानवीकरण अलंकार

पहचान :- किसी निर्जीव वस्तु को सजीव बनाकर प्रस्तुत किया जाये

उदाहरण :- 1. आये महंत बसंत
↓
मन्दिर के पुजारी

2. प्यार अंधा होता है
↓ ↓
निर्जीव सजीवों के गुण

3. हे रजनी वाले सज धज कर तुम कहां चले

4. थक कर सोई है मेरी मौन व्यथा
↓
शोक

यहां शोक को सजीव बनाकर ~~~~ प्रस्तुत किया है